कृष्णयजुर्वेद-सन्ध्यावन्दनम्

ऐक्यानुसन्धानम्

जप-सङ्कल्पः

प्रणवजपः—प्राणायामः

गायत्री-आवाहनम् .

गायत्री-जपः

गायत्री-उपस्थानम्

सम्यभिवादनम्

प्रातः सन्ध्या सूर्योपस्थानम् .

देवतपंणम् .

5

5

6

6

6

6

8

9

9

9

11

11

12

12

13

13

14

| अनुक्रमणिका | 2 |
|----------------------|----|
| दिग्देवता-वन्दनम् | 14 |
| यम-वन्दनम् | 15 |
| सर्प-रक्षा | 15 |
| हरिहर-वन्दनम् | 16 |
| सूर्यनारायण-वन्दनम् | 16 |
| समर्पणम् | 18 |
| रक्षा | 18 |
| • | |
| माध्याह्निकम् | 18 |
| आचमनम् | 18 |
| विघ्नेश्वर-ध्यानम् | 19 |
| प्राणायामः | 20 |
| सङ्कल्पः | 20 |
| मार्जनम् | 20 |
| प्राशनम् | 21 |
| पुनर्मार्जनम् | 21 |
| अर्घ्यप्रदानम् | 22 |
| प्रायश्चित्तार्घ्यम् | 22 |
| ऐक्यानुसन्धानम् | 23 |
| देवतर्पणम् | 23 |
| जप-सङ्कल्पः | 24 |
| | |

| अनुक्रमणिका | 3 |
|----------------------------|----|
| प्रणवजपः—प्राणायामः | 25 |
| गायत्री-आवाहनम् | 25 |
| गायत्री-जपः | 26 |
| गायत्री-उपस्थानम् | 27 |
| माध्याह्निक सूर्योपस्थानम् | 27 |
| समष्ट्यभिवादनम् | 28 |
| दिग्देवता-वन्दनम् | 28 |
| यम्-वन्दनम् | 29 |
| सर्प-रक्षा | 29 |
| हरि्हर-वन्दनम् | 30 |
| सूर्यनारायण-वन्दनम् | 30 |
| समर्पणम् | 31 |
| रक्षा | 32 |
| | |
| सायं सन्ध्यावन्दनम् | 32 |
| आचमनम् | 32 |
| विघ्नेश्वर-ध्यानम् | 33 |
| प्राणायामः | 33 |
| सङ्कल्पः | 34 |
| मार्जनम् | 34 |
| प्राशनम् | 35 |
| | |

| पुनर्मार्जनम् | अनुक्रमणिका | 4 |
|--|----------------------|----|
| प्रायश्चित्ताच्येम् 36 ऐक्यानुसन्धानम् 37 देवर्तर्पणम् 37 जप-सङ्कल्पः 38 प्रणवजपः—प्राणायामः 39 गायत्री-आवाहनम् 39 गायत्री-जपः 40 गायत्री-उपस्थानम् 41 सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम् 41 समष्ट्राभिवादनम् 42 दिग्देवता-वन्दनम् 42 पम-वन्दनम् 43 सर्प-रक्षा 43 हिरहर-वन्दनम् 44 सूर्यनारायण-वन्दनम् 44 समर्पणम् 45 | पुनर्मार्जनम् | 35 |
| प्रायश्चित्ताच्येम् 36 ऐक्यानुसन्धानम् 37 देवर्तर्पणम् 37 जप-सङ्कल्पः 38 प्रणवजपः—प्राणायामः 39 गायत्री-आवाहनम् 39 गायत्री-जपः 40 गायत्री-उपस्थानम् 41 सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम् 41 समष्ट्राभिवादनम् 42 दिग्देवता-वन्दनम् 42 पम-वन्दनम् 43 सर्प-रक्षा 43 हिरहर-वन्दनम् 44 सूर्यनारायण-वन्दनम् 44 समर्पणम् 45 | अर्घ्यप्रदानम् | 36 |
| देवतर्पणम्37जप-सङ्कल्पः38प्रणवजपः—प्राणायामः39गायत्री-आवाहनम्40गायत्री-जपः40गायत्री-उपस्थानम्41सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम्41समष्ट्यभिवादनम्42दिग्देवता-वन्दनम्42यम-वन्दनम्43सर्प-रक्षा43हरिहर-वन्दनम्44सूर्यनारायण-वन्दनम्44समर्पणम्45 | प्रायश्चित्तार्घ्यम् | 36 |
| जप-सङ्कल्पः 38 प्रणवजपः—प्राणायामः 39 गायत्री-आवाहनम् 40 गायत्री-जपः 40 गायत्री-उपस्थानम् 41 सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम् 42 दिग्देवता-वन्दनम् 42 यम-वन्दनम् 43 सर्प-रक्षा 43 हरिहर-वन्दनम् 44 स्प्र्यनारायण-वन्दनम् 44 समर्पणम् 45 | | 37 |
| जप-सङ्कल्पः 38 प्रणवजपः—प्राणायामः 39 गायत्री-आवाहनम् 40 गायत्री-जपः 40 गायत्री-उपस्थानम् 41 सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम् 42 दिग्देवता-वन्दनम् 42 यम-वन्दनम् 43 सर्प-रक्षा 43 हरिहर-वन्दनम् 44 स्प्र्यनारायण-वन्दनम् 44 समर्पणम् 45 | देवतर्पणम् | 37 |
| गायत्री-आवाहनम् | जप-सङ्कल्पः | 38 |
| गायत्री-जपः 40 गायत्री-उपस्थानम् 41 सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम् 42 दिग्देवता-वन्दनम् 42 यम-वन्दनम् 43 सर्प-रक्षा 43 हरिहर-वन्दनम् 44 सूर्यनारायण-वन्दनम् 44 समर्पणम् 45 | | 39 |
| गायत्री-उपस्थानम् 41 सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम् 41 समष्ट्राभिवादनम् 42 दिग्देवता-वन्दनम् 42 यम-वन्दनम् 43 सर्प-रक्षा 43 हरिहर-वन्दनम् 44 सूर्यनारायण-वन्दनम् 44 समर्पणम् 45 | | 39 |
| सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम् 41 समष्ट्यभिवादनम् 42 दिग्देवता-वन्दनम् 42 यम-वन्दनम् 43 सर्प-रक्षा 43 हरिहर-वन्दनम् 44 सूर्यनारायण-वन्दनम् 44 समर्पणम् 45 | | 40 |
| समष्ट्राभिवादनम्42दिग्देवता-वन्दनम्42यम-वन्दनम्43सर्प-रक्षा43हरिहर-वन्दनम्44सूर्यनारायण-वन्दनम्44समर्पणम्45 | गायत्री-उपस्थानम् | 41 |
| दिग्देवता-वन्दनम्42यम-वन्दनम्43सर्प-रक्षा43हरिहर-वन्दनम्44सूर्यनारायण-वन्दनम्44समर्पणम्45 | | 41 |
| यम-वन्दनम्43सर्प-रक्षा43हरिहर-वन्दनम्44सूर्यनारायण-वन्दनम्44समर्पणम्45 | समध्यभिवादनम् | 42 |
| सर्प-रक्षा | दिग्देवता-वन्दनम् | 42 |
| हरिहर-वन्दनम् | | 43 |
| सूर्यनारायण-वन्दनम् | • | 43 |
| सूर्यनारायण-वन्दनम् | हरि्हर-वन्दनम् | 44 |
| समपेणम् 45 | सूर्यनारायण-वन्दनम् | 44 |
| रक्षा | समर्पणम् | 45 |
| | रक्षा | 46 |
| | | |

आचमनम् (प्रातः सन्ध्या)

5

॥प्रातः सन्ध्यावन्दनम्॥

॥ आचमनम्॥

(कुक्कुटासने)

अच्युताय नमः। अनन्ताय नमः। गोविन्दाय नमः।

द्धिः परिमृज्य।

॥ अङ्गवन्दनम्॥

- १. केशव (touch right cheek with right thumb)
- २. नारायण (touch left cheek with right thumb)
- ३. माधव (touch right eye with right ring finger)
- ४. गोविन्द (touch left eye with right ring finger)
- ५. विष्णो (touch right nostril with right index finger)
- ६. मधुसूदन (touch left nostril with right index finger)
- ७. त्रिविक्रम (touch right ear with right little finger)
- ८. वामन (touch left ear with right little finger)
- ९. श्रीधर (touch right shoulder with right middle finger)
- १०. ह्पीकेश (touch left shoulder with right middle finger)
- ११. पद्मनाभ (touch navel with right four fingers)
- १२. दामोदर (touch the centre of the head with all five fingers)

॥विघ्नेश्वर-ध्यानम्॥

भृगुः—अङ्गलीपृष्ठभागाभ्यां कुट्टणं पश्चवारकम्।

(strike gently on the temples five times with the back side of the fingers)

शुक्काम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्वविघ्रोपशान्तये॥

॥ प्राणायामः ॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योती्रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुव्रोम्॥

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रातः सन्ध्यामुपासिष्ये।

॥ मार्जनम्॥

आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः। ता नं ऊर्जे दंधातन।

ॐ श्री-केशवाय नमः।

पुनमाजनम् (प्रातः सन्ध्या) महेरणांय चक्षंसे।

ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

यो वंः शिवतंमो रसंः। तस्यं भाजयतेह नः। उशतीरिंव मातरंः।

तस्मा अरं गमाम वः। यस्य क्षयांय जिन्बंथ। आपों जनयंथा च नः॥

॥ प्राशनम् ॥

सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युंकृतेभ्यः। पापेभ्यों रक्षन्ताम्।

यद्रात्रिया पापंमकार्षम्। मनसा वाचां हस्ताभ्याम्। पद्मामुदरेण शिश्ञा। रात्रिस्तदेवलुम्पतु। यत्किं चे दुरितं मिये। इदमहं

माममृंतयोनौ। सूर्ये ज्योतिषि जुहोंमि स्वाहा॥

॥ पुनर्मार्जनम्॥

आचमनम्।

दिधकावणों अकारिषम्।

जिष्णोरश्वंस्य वाजिनंः।

सुर्भि नो मुखांकर्त्। प्रणु आयूर्ेषि तारिषत्॥

आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः। ता न ऊर्जे दंधातन। महेरणाय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसंः। तस्यं भाजयतेह नंः।

तस्मा अरं गमाम वः। यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपो जनयंथा च नः॥

उशतीरिंव मातरंः।

ओं भूर्भुवः सुर्वः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुवरिंण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥

यात्॥ (एवं त्रिः)

॥ प्रायश्चित्तार्घ्यम् ॥

.

प्राणायामः॥

(ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रातः सन्ध्या) कालातीतप्रायश्चित्तार्थम् अर्घ्यप्रदानम् करिष्ये॥ ओं भूर्भुवः सुवैः। तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो

नः प्रचोदयात्॥ (आत्मप्रदक्षिणं परिषेचनं च)

॥ ऐक्यानुसन्धानम्॥

असावादित्यो ब्रह्म। ब्रह्मैवाहमस्मि॥

ध्यानम्॥ शानमनम

आचमनम्।

॥ देवतर्पणम्॥

॥ नवग्रहदेवता-तर्पणम्॥

- १. आदित्यं तर्पयामि।
- २. सोमं तर्पयामि।
- ३. अङ्गारकं तर्पयामि।

॥इति प्रातः सन्ध्यावन्दन-पूर्वभागः॥

10

दवतपणम् (प्रातः सन्ध्या)

४. बुधं तर्पयामि। ५. बृहस्पतिं तर्पयामि। ६. शुऋं तर्पयामि। ७. शनैश्चरं तर्पयामि। ८. राहं तर्पयामि।

४. गोविन्दं तर्पयामि।
५. विष्णुं तर्पयामि।
६. मधुसूदनं तर्पयामि।
७. त्रिविक्रमं तर्पयामि।
८. वामनं तर्पयामि।
९. श्रीधरं तर्पयामि।
१९. हषीकेशं तर्पयामि।
११. पद्मनामं तर्पयामि।

आचमनम्।

॥जप-सङ्कल्पः॥ शुक्काम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ प्राणायामः।

॥ सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

11

प्रातः

प्रणवजपः—प्राणायामः (प्रातः सन्ध्या)

॥ प्रणवजपः—प्राणायामः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं

सन्ध्या-गायत्री-महामन्त्र-जपं करिष्ये।

प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा। देवी गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता। भूरादि-सप्त-व्याहृतीनाम् अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-गौतम-काश्यप-अङ्गिरस ऋषयः। गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप्-बृहती-पङ्कि-त्रिष्टुप्-जगत्यः छन्दांसि।

प्राणायामे विनियोगः॥ ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो

नंः प्रचोदयाँत्॥ ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

अग्नि-वायु-अर्क-वागीश-वरुण-इन्द्र-विश्वदेवा देवताः।

आयात्वित्यनुवाकस्य वामदेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। गायत्री देवता।

आयांतु वरंदा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं छन्दंसां मातेदं ब्रह्म जुषस्वं नः॥

ओजोंऽसि सहोंऽसि बलंमसि भ्राजोंऽसि देवानां धाम् नामांसि विश्वंमसि विश्वायुः सर्वमिस सूर्वायुरभिभूरों गायत्रीमावांहयामि सावित्रीमावांहयामि सरस्वतीमावांह-यामि सावित्र्या ऋषिर्विश्वामित्रः। निचृद्गायत्री छन्दः। सविता देवता।

गायत्री-जपे विनियोगः॥

॥ गायत्री-जपः॥

॥ध्यानम्॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवळच्छायैर्मुखैस्रीक्षणैः युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्। गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गदाम् शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥ यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे। प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥ 13

प्रातः सन्ध्या सूयापस्थानम् (प्रातः सन्ध्या)

ओं।

॥प्रातः सन्ध्या सूर्योपस्थानम्॥

उत्तमे शिखंरे देवी भूम्यां पर्वतुमूर्धनि।

ब्राह्मणैभ्यो ह्यंनुज्ञानं गच्छ देवि यथा सुंखम्॥

मित्रस्यं चर्षणी धृतः श्रवों देवस्यं सान्सिम्। सृत्यं चित्रश्रंवस्तमम्॥ मित्रो जनान् यातयित प्रजानन्मित्रो दांधार

पृथिवीमुतद्याम्। मित्रः कृष्टीरिनंमिषाभिचंष्टे सत्यायं ह्व्यं घृतवंद्विधेम॥ प्र समित्र मर्तो अस्तु प्रयंस्वान् यस्तं आदित्य

॥ सम््यभिवादनम्॥

सन्ध्यायै नमः। (East)

सावित्रयै नमः। (South)

गायत्र्ये नमः। (West)

सरस्वत्यै नमः। (North)

सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः। (East)

कामोऽकार्षीन्मन्युरकार्षीन्नमो नमः।

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः

(आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥ नमस्कारः।

॥ दिग्देवता-वन्दनम् ॥

प्राच्ये दिशे नमः। (East) दक्षिणायै दिशे नमः। (South) प्रतीच्ये दिशे नमः। (West)

सप-रक्षा (प्रातः सन्ध्या)

उदीच्यै दिशे नमः। (North) ऊर्ध्वाय नमः। (up)

अधराय नमः। (down)

अन्तरिक्षाय नमः। (up)

भूम्यै नमः। (down) ब्रह्मणे नमः। (up)

विष्णवे नमः। (down)

मृत्यवे नमः।

॥ यम-वन्दनम्॥

यमाय नमः (South)

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।

वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥

औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

चित्रगुप्ताय वै नम ओं नम इति॥

॥ सर्प-रक्षा॥

(North)

नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः॥ सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष। जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मरन्॥ जरत्कारोर्जरत्कार्वां समुत्पन्नो महायशाः। अस्तीकः सत्यसन्धो मां पन्नगेभ्योऽभिरक्षतु॥

पन्नगेभ्योऽभिरक्षत्वोन्नम इति॥

॥ हरिहर-वन्दनम्॥

(North)

ऋतः सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गेलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नर्मः॥

विश्वरूपाय वै नम ओं नम इति॥

॥ सूर्यनारायण-वन्दनम्॥

(East)

नमः सिवत्रे जगदेकचक्षुषे
जगत्प्रसूति-स्थिति-नाश-हेतवे।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे
विरिश्चि-नारायण-शङ्करात्मने ॥
ध्येयः सदा सिवतृमण्डल-मध्यवर्ती
नारायणः सरसि-जासन-सन्निविष्टः।

केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचकः॥

शङ्ख-चक्र-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत। गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥

श्री-केशवं प्रतिगच्छत्यों नम इति॥

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः (आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

() शमा नामाहम् आस्म माः॥

नमस्कारः।

॥समर्पणम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

आचमनम्।

॥ रक्षा ॥

अद्या नो देव सवितः प्रजावंथ्सावीः सौभंगम्।
परां दुःष्वप्नियः सुव।
विश्वांनि देव सवितर्दुरितानि परां सुव।
यद्भद्रं तन्म आ सुव।
॥इति प्रातः सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

॥ माध्याह्निकम्॥

॥ आचमनम्॥

(कुक्कुटासने)

अच्युताय नमः। अनन्ताय नमः। गोविन्दाय नमः।

द्धिः परिमृज्य।

॥ अङ्गवन्दनम्॥

- १. केशव (touch right cheek with right thumb)
- २. नारायण (touch left cheek with right thumb)
- ३. माधव (touch right eye with right ring finger)
- ४. गोविन्द (touch left eye with right ring finger)
- 4. awil (touch right nostril with right index finger)
- ६. मध्स्दन (touch left nostril with right index finger)
- ७. त्रिविक्रम (touch right ear with right little finger)
- ८. वामन (touch left ear with right little finger)
- ९. श्रीधर (touch right shoulder with right middle finger)
- १०. ह्रपीकेश (touch left shoulder with right middle finger)
- ११. पदानाभ (touch navel with right four fingers)
- १२. दामोदर (touch the centre of the head with all five fingers)

॥विघ्नेश्वर-ध्यानम्॥

भृगुः—अङ्गलीपृष्ठभागाभ्यां कुट्टणं पञ्चवारकम्।

(strike gently on the temples five times with the back side of the fingers)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

॥ प्राणायामः ॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं माध्याह्निकं करिष्ये।

॥ मार्जनम्॥

ॐ श्री-केशवाय नमः।
आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः।
ता नं ऊर्जे दंधातन।
महेरणाय चक्षंसे।
यो वंः शिवतंमो रसंः।
तस्यं भाजयतेह नंः।

उश्तीरिंव मातरः। तस्मा अरं गमाम वः। यस्य क्षयांय जिन्वंथ।

यस्य क्षयाय । जन्वथा आपो जनयंथा च नः॥ ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥प्राशनम्॥

आपंः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मण्स्पति ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्ट्मभौज्यं यद्वां दुश्चरितं ममं। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां चे प्रतिग्रह इस्वाहाँ॥

॥ पुनर्मार्जनम्॥

आचमनम्।

द्धिकाव्णों अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनंः। सुर्भि नो मुर्खाकर्त्।

प्रण आयू ५ षि तारिषत्॥

आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः। ता न ऊर्जे दंधातन। महेरणाय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसंः। तस्मा अरं गमाम वः। यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपो जनयेथा च नः॥

प्राणायामः॥

नंः प्रचोदयांत॥

ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

22

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरेंण्यं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयांत॥ (एवं द्विः) ॥ प्रायश्चित्तार्घ्यम् ॥

(ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं माध्याह्निक)

ओं भूर्भुवः सुवंः। तथ्संवितुर्वरेंण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो

कालातीतप्रायश्चित्तार्थम् अर्घ्यप्रदानम् करिष्ये॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

॥ ऐक्यानुसन्धानम् ॥

गानाविको नहा। नहीनानगरिए॥

असावादित्यो ब्रह्म। ब्रह्मेवाहमस्मि॥

(आत्मप्रदक्षिणं परिषेचनं च)

ध्यानम्॥ **आचमनम्।**

॥ देवतर्पणम्॥

॥ नवग्रहदेवता-तर्पणम्॥

- १ आदित्यं तर्पयामि।
- २. सोमं तर्पयामि।
- ३. अङ्गारकं तर्पयामि।
- ४. बुधं तर्पयामि।
- ५. बृहस्पतिं तर्पयामि।
- ६. शुक्रं तर्पयामि।
- ७. शनैश्चरं तर्पयामि।
- ८. राहुं तर्पयामि।
- ९. केतुं तर्पयामि।

॥ केशवादि-तर्पणम्॥

८. वामनं तर्पयामि।

केशवं तर्पयामि।
 नारायणं तर्पयामि।
 माधवं तर्पयामि।
 गोविन्दं तर्पयामि।
 विष्णुं तर्पयामि।
 मधुसूदनं तर्पयामि।
 त्रिविक्रमं तर्पयामि।

१०. हृषीकेशं तर्पयामि।

- ९. श्रीधरं तर्पयामि।
- ११. पद्मनाभं तर्पयामि।
- १२. दामोदरं तर्पयामि।

आचमनम्।

॥इति माध्याह्निक-पूर्वभागः॥

॥ सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

॥ जप-सङ्कल्पः॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणायामः।

॥ प्रणवजपः—प्राणायामः ॥

भूरादिसप्त व्याहृतीनाम् अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-गौतम-काश्यप-

प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा। देवी गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता।

गायत्री-महामन्त्र-जपं करिष्ये।

आङ्गिरस ऋषयः।
गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप्-बृहती-पङ्की-त्रिष्टुप्-जगत्यः छन्दांसि।
अग्नि-वायु-अर्क-वागीश-वरुण-इन्द्र-विश्वेदेवा देवताः।
प्राणायामे विनियोगः॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सृत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरेंण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुव्रोम्॥

॥ गायत्री-आवाहनम्॥

आयात्वित्यनुवाकस्य वामदेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। गायत्री देवता।

आयांतु वरंदा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं छन्दंसां मातेदं ब्रह्म जुषस्वं नः॥ नामांसि विश्वंमिस विश्वायुः सर्वमिस सूर्वायुरभिभूरों गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावाहयामि सरस्वतीमावाह-यामि सावित्र्या ऋषिर्विश्वामित्रः। निचृद्गायत्री छुन्दः। सविता देवता। गायत्री-जपे विनियोगः॥

॥ गायत्री-जपः ॥

॥ध्यानम्॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवळच्छायैर्मुखैस्रीक्षणैः युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्। गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गदाम् शङ्क्षं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥ यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे। प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥

यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे।
प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥
ओं।
भूर्भुवः सुवंः।
तथ्सवितुर्वरेण्यम्।
भर्गो देवस्यं धीमहि।
धियो यो नंः प्रचोदयात्॥

प्राणायामः।

॥ गायत्री-उपस्थानम्॥

आदित्य उपस्थानं करिष्ये। उत्तमे शिखंरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणैभ्यो ह्यनुज्ञानं गच्छ देवि यथा सुंखम्॥

॥माध्याह्निक सूर्योपस्थानम्॥

आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन

सिवता रथेनादेवा यांति भुवंना विपश्यन्। उद्वयं तमेसस्पिर् पश्यन्तो ज्योतिरुत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगेन्म ज्योतिरुत्तमम्। उद्दुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। चित्रं देवानामुदंगादनीकं चक्षुंर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावां पृथिवी अन्तरिक्ष् सूर्यं आत्मा जगंतस्तस्थुषंश्च। तचक्षुंर्देविहितं पुरस्तांच्छुक्रमुचरंत्॥

पश्येम श्रारदेः श्रुतं जीवेम श्रारदेः श्रुतं नन्दांम श्रारदेः श्रुतं मोदांम श्रारदेः श्रुतं भवांम श्रारदेः श्रुतः श्रुणवांम श्रारदेः श्रुतं प्रब्रंवाम श्रारदेः श्रुतमजीताः स्याम श्रारदेः श्रुतं ज्योक्ष् सूर्यं दृशे। य उदंगान्महुतोर्णवांद्विभ्राजमानः सिर्रस्य मध्याथ्स मां वृष्भो ॥ सम््यभिवादनम् ॥

सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः। (East)

सन्ध्यायै नमः। (East) सावित्र्यै नमः। (South) गायत्र्यै नमः। (West) सरस्वत्यै नमः। (North)

कामोऽकार्षींन्मन्युरकार्षींन्नमो नमः।

लोहिताक्षः सूर्यो विपश्चिन्मनंसा पुनात्॥

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः

(आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी () शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

नमस्कारः।

॥ दिग्देवता-वन्दनम्॥

दक्षिणायै दिशे नमः। (South)

प्राच्ये दिशे नमः। (East)

प्रतीच्ये दिशे नमः। (West)

उदीच्यै दिशे नमः। (North)

29

॥ यम-वन्दनम् ॥ यमाय नमः (South)

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभृतक्षयाय च॥

अधराय नमः। (down) अन्तरिक्षाय नमः। (up)

भूम्यै नमः। (down) ब्रह्मणे नमः। (up) विष्णवे नमः। (down)

मृत्यवे नमः।

औदुम्बराय दभ्राय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

चित्रगुप्ताय वै नम ओं नम इति॥

॥ सर्प-रक्षा॥

(North)

नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः॥

30

सपापसप मद्र त गच्छ सप महाविषा जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मरन्॥ जरत्कारोर्जरत्कार्वां समुत्पन्नो महायशाः। अस्तीकः सत्यसन्धो मां पन्नगेभ्योऽभिरक्षतु॥

पन्नगेभ्योऽभिरक्षत्वोन्नम इति॥

॥हरिहर-वन्दनम्॥

(North)

ऋतः सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमंः॥ विश्वरूपाय वै नम ओं नम इति॥

ान जा नन श्राता

॥ सूर्यनारायण-वन्दनम्॥

(East)

नमः सिवत्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूति-स्थिति-नाश-हेतवे। त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिश्चि-नारायण-शङ्करात्मने ॥ ध्येयः सदा सिवतृमण्डल-मध्यवर्ती नारायणः सरसि-जासन-सिन्नविष्टः। केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचकः॥ शङ्ख-चक्र-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत। गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥ श्री-केशवं प्रतिगच्छत्यों नम इति॥

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः (आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

॥ समर्पणम् ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

आचमनम्।

नमस्कारः।

अद्या नों देव सवितः प्रजावंध्सावीः सौभंगम्। परां दःष्वप्निय सव। विश्वांनि देव सवितर्द्रितानि परां सव। यद्धद्रं तन्म आ स्व।

॥इति माध्याह्निकस्-उत्तरभागः॥

॥सायं सन्ध्यावन्दनम्॥

(Begin facing North)

॥ आचमनम्॥

(कुक्कुटासने)

अच्युताय नमः। अनन्ताय नमः। गोविन्दाय नमः।

द्धिः परिमुज्य।

॥ अङ्गवन्दनम् ॥

- १. केशव (touch right cheek with right thumb)
 - २. नारायण (touch left cheek with right thumb)
 - ३. माधव (touch right eye with right ring finger)
 - ४. गोविन्द (touch left eye with right ring finger)

- ५. विष्णो (touch right nostril with right index finger) ६. मध्स्दन (touch left nostril with right index finger)
- ७. त्रिविक्रम (touch right ear with right little finger)
- ८. वामन (touch left ear with right little finger)
- ९. श्रीधर (touch right shoulder with right middle finger)
- १०. ह्पीकेश (touch left shoulder with right middle finger)
- ११. पद्मनाभ (touch navel with right four fingers)
- १२. दामोदर (touch the centre of the head with all five fingers)

॥विघ्नेश्वर-ध्यानम्॥

भृगुः—अङ्गलीपृष्ठभागाभ्यां कुट्टणं पश्चवारकम्।

(strike gently on the temples five times with the back side of the fingers)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

॥ प्राणायामः ॥

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सृत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योती्रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं सायं सन्ध्यामुपासिष्ये।

॥ मार्जनम्॥

ॐ श्री-केशवाय नमः।
आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः।
ता नं ऊर्जे दंधातन।
महेरणाय चक्षंसे।
यो वंः शिवतंमो रसंः।
तस्यं भाजयतेह नंः।
उश्तीरिंव मातरंः।
तस्मा अरं गमाम वः।
यस्य क्षयांय जिन्वंथ।
आपो जनयंथा च नः॥

ओं भूर्भुवः सुवंः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥प्राशनम्॥

अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युंकृतेभ्यः। पापेभ्यों रक्ष्वन्ताम्। यदह्रा पापंमकार्षम्। मनसा वाचां हस्ताभ्याम्। पद्मामुदरेण शि्षञा। अह्स्तदंवलुम्पतु। यत्किं चं दुरितं मिये। इदमहं माममृंतयोनौ। सत्ये ज्योतिषि जुहोंमि स्वाहा॥

॥पुनर्मार्जनम्॥

आचमनम्।

द्धिकाव्णों अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनंः। सुर्भि नो मुखांकर्त्। प्रणु आयूर्ंषि तारिषत्॥

आपो हि ष्ठा मंयो भुवंः। ता नं ऊर्जे दंधातन। महेरणाय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसंः। तस्यं भाजयतेह नंः। उशतीरिंव मातरंः।

तस्मा अरं गमाम वः।

आपों जनयंथा च नः॥

ओं भूर्भुवः सुर्वः॥ (आत्म-परिषेचनम्)

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

(Turn West)

ओं भूर्भुवः सुर्वः। तथ्संवितुर्वरेंण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयांत॥

(एवं त्रिः)

सायं

॥ प्रायश्चित्तार्घ्यम् ॥

प्राणायामः॥

(ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं सन्ध्या) कालातीतप्रायश्चित्तार्थम् अर्घ्यप्रदानम् करिष्ये॥

ओं भूर्भुवः सुर्वः। तथ्संवितुर्वरेंण्यं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियो यो

नंः प्रचोदयाँत्॥

(आत्मप्रदक्षिणं परिषेचनं च)

असावादित्यो ब्रह्म। ब्रह्मैवाहमस्मि॥

(Face North Again)

आचमनम्।

ध्यानम्॥

॥ देवतर्पणम्॥

॥ नवग्रहदेवता-तर्पणम्॥

- १. आदित्यं तर्पयामि।
- २. सोमं तर्पयामि।
- ३. अङ्गारकं तर्पयामि।
- ४. बुधं तर्पयामि।
- ५. बृहस्पतिं तर्पयामि। ६. शुऋं तर्पयामि।
- श्रुनेश्चरं तर्पयामि।
- ७. शनश्चर तपयामा ४. चन्रं चरित्रकिः
- ८. राहुं तर्पयामि।

९. केतुं तर्पयामि।

॥ केशवादि-तर्पणम्॥

१. केशवं तर्पयामि।

- ४. गोविन्दं तर्पयामि।
 - ५. विष्णुं तर्पयामि।

२. नारायणं तर्पयामि। ३. माधवं तर्पयामि।

- ६. मधुसुदनं तर्पयामि।
- ७. त्रिविक्रमं तर्पयामि।
- ८. वामनं तर्पयामि। ९. श्रीधरं तर्पयामि।
- १०. हृषीकेशं तर्पयामि।
- ११. पद्मनाभं तर्पयामि।
- १२. दामोदरं तर्पयामि।

आचमनम्।

॥इति सायं सन्ध्यावन्दन-पूर्वभागः॥

॥ सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

॥ जप-सङ्कल्पः॥

(Face West)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणायामः।

<u>।) प्रणवजपः—प्राणायामः ।।</u>

भूरादिसप्त व्याहृतीनाम् अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-गौतम-काश्यप-

प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा। देवी गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता।

गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप्-बृहती-पङ्की-त्रिष्टुप्-जगत्यः छन्दांसि। अग्नि-वायु-अर्क-वागीश-वरुण-इन्द्र-विश्वेदेवा देवताः।

ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः।

ओ॰ सृत्यम्॥ ओं तथ्संवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयात्॥ ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

॥ गायत्री-आवाहनम्॥

आङ्गिरस ऋषयः।

प्राणायामे विनियोगः॥

आयात्वित्यनुवाकस्य वामदेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। गायत्री देवता।

आयांतु वरंदा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं छन्दंसां मातेदं ब्रह्म जुषस्वं नः॥ गायत्रा-जपः (साय सन्ध्या)

ओजोंऽसि सहोंऽसि बलंमिस भ्राजोंऽसि देवानां धाम्
नामांसि विश्वंमिस विश्वायुः सर्वमिस सर्वायुरिभभूरों
गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावाहयामि सरस्वतीमावाहयामि सावित्र्या ऋषिर्विश्वामित्रः। निचृद्गायत्री छन्दः। सविता
देवता।

॥ गायत्री-जपः ॥

गायत्री-जपे विनियोगः॥

॥ध्यानम्॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवळच्छायैर्मुखैस्रीक्षणैः युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्। गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गदाम् शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥ यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे। प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥

भूर्भुवः सुवंः। तथ्सवितुर्वरैण्यम्। भर्गो देवस्यं धीमहि।

ओं।

धामाह पन्नोटर

धियो यो नंः प्रचोदयात्॥

प्राणायामः।

॥ गायत्री-उपस्थानम्॥

सायं सन्ध्या गायत्री उपस्थानं करिष्ये। उत्तमे शिखंरे देवी भूम्यां पंर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणैभ्यो ह्यंनुज्ञानं गच्छ देवि यथा संखम॥

॥सायं सन्ध्या सूर्योपस्थानम्॥

इमं में वरुण श्रुधी हवंमद्या चं मृडय। त्वामंवस्युराचंके॥ तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमानुस्तदाशाँस्ते यजंमानो हविर्मिः। अहेंडमानो वरुणेह बोध्युरुंश रस मा न आयुः प्रमोपीः॥ यचिद्धिते विशो यथा प्रदेव वरुण व्रतम्। मिनीमसि द्यविद्यवि॥ यत्किं चेदं वंरुण दैव्ये जर्नेभिद्रोहं मनुष्यांश्वरांमसि। अचिंतीयत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनंसो देव रीरिषः॥ कितवासो यद्विरिपुर्नदीवि यद्वां घा सुत्यमुत यं न विद्य। सर्वाताविष्यं शिथिरेव देवार्थां ते स्याम वरुण प्रियासंः॥

42

सन्ध्यायै नमः। (West)

गायत्र्ये नमः। (East)

मावित्र्यै नमः। (North)

सरस्वत्यै नमः। (South)

सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः। (West)

कामोऽकार्षीन्मन्युरकार्षीन्नमो नमः।

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः (आपस्तम्ब) सुत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

नमस्कारः।

॥दिग्देवता-वन्दनम्॥

प्रतीच्यै दिशे नमः। (West)

उदीच्यै दिशे नमः। (North) प्राच्ये दिशे नमः। (East)

दक्षिणायै दिशे नमः। (South)

ऊर्ध्वाय नमः। (up) अधराय नमः। (down)

अन्तरिक्षाय नमः। (up)

ब्रह्मणे नमः। (up) विष्णवे नमः। (down) मृत्यवे नमः।

भम्यै नमः। (down)

॥ यम-वन्दनम्॥

यमाय नमः (South)

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥

औदुम्बराय दभ्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

चित्रगुप्ताय वै नम ओं नम इति॥

॥ सर्प-रक्षा॥

(North)

नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः॥ सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष। जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मरन्॥ जरत्कारोर्जरत्कार्वां समुत्पन्नो महायशाः। अस्तीकः सत्यसन्धो मां पन्नगेभ्योऽभिरक्षतु॥ पन्नगेभ्योऽभिरक्षत्वोन्नम इति॥

॥ हरिहर-वन्दनम्॥

"erer right,

(North)

स्यनारायण-वन्दनम् (साय सन्ध्या)

ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्।

ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥ विश्वरूपाय वै नम ओं नम इति॥

॥ सूर्यनारायण-वन्दनम्॥

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे

(West)

जगत्प्रसूति-स्थिति-नाश-हेतवे। त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे

विरिश्चि-नारायण-शङ्करात्मने ॥ ध्येयः सदा सवितृमण्डल-मध्यवर्ती नारायणः सरसि-जासन-सन्निविष्टः।

केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी

हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचकः॥

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥ आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥

शङ्ख-चऋ-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत।

श्री-केशवं प्रतिगच्छत्यों नम इति॥

अभिवादये () (त्रयार्षेय) प्रवरान्वित () गोत्रः

(आपस्तम्ब) सूत्रः यजुःशाखा अध्यायी

() शर्मा नामाहम् अस्मि भोः॥

नमस्कारः।

॥ समर्पणम् ॥

(Sit down facing North)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

आचमनम्।

॥ रक्षा ॥

अद्या नों देव सवितः प्रजावंथ्सावीः सौभंगम्। परां दःष्वप्निय स्व।

विश्वांनि देव सवितर्द्रितानि परां सव।

यद्भद्रं तन्म आ सुंव।

॥इति सायं सन्ध्यावन्दन-उत्तरभागः॥

A generated on October 13, 2024

Downloaded from

🔾 http://stotrasamhita.github.io | 🖸 StotraSamhita | Credits

